3

कक्षा में पढ़ने की आदत

रजनी*

प्राय: सरकारी स्कूलों की प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में यह देखा जाता रहा है कि इस स्तर पर बच्चों में पढ़ना-लिखना, सीखना-सिखाना तथा पठन जैसे कौशलों का विकास कैसे किया जाए, यह एक गंभीर मुद्दा होता है। कक्षा में बच्चों के कमज़ोर पठन-बोध को एक 'समस्या' की तरह देखा जाता है। पाठ्य-पुस्तकों में आने वाले बदलावों व *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के आने के उपरान्त भी पढ़ने को लेकर प्राय: कक्षाएँ संदर्भ रहित व अर्थहीनता के उपागम को अनुसरित करती दिखती हैं, जहाँ पढ़ने की शुरुआत ही अक्षरों के विभाजन से होती है। इन वर्तमान परिस्थितियों में प्राथमिक शालाओं में निस्संदेह बच्चों को रोचक व सार्थक रूप में पढ़ना-लिखना सिखाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य तो है, परंतु कक्षागत स्तर पर बच्चों के सीखने के तरीकों का सूक्ष्म निरीक्षण व सैद्धांतिकी की समझ के साथ कक्षा में होने वाले दैनिक अनुभवों पर चिंतन से यह चुनौती संभवत: सरल हो सकती है। प्रस्तुत लेख में कक्षा तीन में प्रशिक्षु शिक्षण के दौरान हुए कुछ ऐसे ही रोचक अनुभवों के हवाले से बच्चों में पढ़ने की आदतों का विकास किस प्रकार संभव हो सकता है, जैसे विषय पर चर्चा की गई है।

कक्षा तीन में पढ़ाने का अवसर मेरे लिए कई मायनों में चुनौतीपूर्ण था, क्योंकि इस कक्षा तक आते-आते बच्चे एक सटीक परिपाटी पर चलने के आदी हो चुके थे। गृह कार्य के नाम पर बिना समझ के ब्लैकबोर्ड और दूसरी तरह से नकल कर उत्तर लिखने से परेशान हो चुके थे। इस कक्षा में प्रारंभिक शिक्षण के समय बच्चे अकसर पाठ के पूरा होने पर सवाल-जबाव के दौरान मेरी तरफ इस उम्मीद से ताकते थे कि पूछे गए सवाल का जवाब मेरे द्वारा ही ब्लैकबोर्ड पर लिख दिया जाएगा। उस समय बच्चों से सवाल-जवाब की प्रक्रिया में खासी ऊर्जा का दोहन करना होता था। कक्षा में तकरीबन आधी से ज़्यादा संख्या उन बच्चों की थी जिनको यह लगता है कि वे पढ़ना नहीं जानते हैं। इसके साथ ही जो बच्चे पढ़ना जानते हैं उनका कब्ज़ा कक्षा में आगे की बेंचों पर होता था। 'वे बच्चे' जो 'पढ़ना नहीं जानते थे' कक्षा में पीछे बैठा करते थे। अकसर यह बच्चे कक्षा में स्वयं को अलग-थलग रखते थे और कक्षा की चर्चाओं में भी हिस्सा नहीं लेते थे। कक्षा के माहौल में तथाकथित कमज़ोर बनाम होशियार की श्रेणी बनी हुई थी। कक्षा मिलने के सप्ताह भर बाद सबसे पहला जो काम हमने किया वह यह कि कक्षा में एक किताबी कोना बनाया, जिसमें यही कोई पंद्रह

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* केंद्रीय शिक्षा संस्थान, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110 007

से बीस कहानी की किताबें रखी गईं प्रारंभ में कुछ किताबें फाड़ी गईं कुछ किताबों के पन्नों पर चित्रकारी की गई परंतु इस सब में जो सबसे ज़्यादा ध्यान खींचने वाली बात मेरे लिए थी, वह यह कि कक्षा के वे बच्चे जो अपने आप को 'न पढ़ने वालों' की श्रेणी में रखते थे वे अब किताबों के साथ अपना एक रिश्ता बनाने लग गए थे। जब भी उन्हें मौका मिलता वे किताबों की ओर चले जाते व उन्हें उलट-पलट कर देखने लगते। धीरे-धीरे वे बच्चे उन किताबों पर लिखे अक्षरों को पहचानने की कोशिश करते व अपने दूसरे साथियों तथा मुझसे आकर पूछते कि 'मैडम इसको क्या पढ़ेंगे? इस किताब का क्या नाम है? या इस पर जो लिखा है उसे क्या पढ़ते हैं?' कई बार वे चित्रों की मदद से लिखे हुए का अंदाज़ा लगाते और अकसर अपने अंदाज़े को सही साबित करने के लिए मुझसे पूछने आते कि मैडम क्या यहाँ जो लिखा है उसे हाथी पढेंगे! इसे बिल्ली पढ़ेंगे! आदि-आदि। इस तरह से हमारी कक्षा में अब पढ़ने की शुरुआत और जुगत दोनों होने लगी थी। वे बच्चे जो अब तक पढ़ना जान चुके थे और जो पढ़ने की शुरुआती अवस्था में थे दोनों ही समूह इस जुगत में निरंतर लगे रहते थे। अब बारी थी कक्षा में एक ऐसे सकारात्मक पढ़ने-लिखने के माहौल की जो बच्चों को पढ़ने-लिखने के बहुत से मौके दे। कक्षा में इसके लिए सबसे पहली शुरुआत प्रातःकालीन संदेश (morning message) लेखन से की गई। जिसके लिए बच्चों के रोज़मर्रा के जीवन के अनुभवों का प्रयोग किया जाता, जैसे — कक्षा में आते ही बच्चे अकसर अपने पिछले बीते दिन में हुई घटनाओं पर बहुत बात करना चाहते थे। इसके लिए कक्षा में यह एक नियम बनाया गया कि रोज़ सुबह आते ही हम सभी एक-एक करके कक्षा में अपने सभी साथियों की बात सुनेंगे। कक्षा में यदि कोई अपनी किसी बात को बताना चाहता है या साझा करना चाहता है तो वह बता सकता है और फिर हम किसी एक बच्चे की कही गई बात को उसके नाम के साथ ब्लैकबोर्ड पर लिखेंगे। शुरुआत में इस प्रक्रिया में बहुत कुछ गड़बड़ हुआ क्योंकि सभी को यह चाव था कि मेरी बात ब्लैकबोर्ड पर लिखी जाए इसलिए कुछ बच्चे अनर्गल कहानियाँ भी बनाते थे और अकसर कक्षा में इस बात को लेकर मतभेद भी पैदा होता था कि किस बच्चे की बात ब्लैकबोर्ड पर आये और किसकी नहीं। समय के साथ-साथ बच्चों को यह भी समझ में आया कि केवल अनर्गल कहानियाँ बनाने से काम नहीं चलेगा, बल्कि एक समय पर कक्षा के बच्चे बड़ी ही तार्किता और लोकतांत्रिक तरीके से यह तय भी करने लगे कि आज *मोर्निंग मैसेज* में किस बच्चे की बात बहुत रोचक और ज़रूरी थी उसी बात को ब्लैकबोर्ड पर लिखा जाये। जैसे एक दिन एक बच्ची ने कहा कि 'उसने स्कूल के बाहर एक बंदरिया को देखा जिसने अपने छोटे से बच्चे को चिपका रखा था और स्कूल के कुछ बच्चे उसे पत्थर मार रहे थे जिसे देख कर उसे बहुत दुःख हुआ।' कक्षा के बच्चों ने चर्चा के अंत में आपस में यह सहमति जताई कि यही बात ब्लैकबोर्ड पर लिखी जाये। इस बात में एक नैतिक संदेश होने के साथ-साथ एक भाव है कि किसी को अकारण ही तंग किया जाये तो उसे कितना दुःख होता होगा।

बच्चे अकसर कक्षा में इस तरह की संवेदनाओं से गुज़रते हैं इसलिए संभवतः वे यह जानते हैं कि इस बात का कितना महत्त्व है! बच्चे अकसर अपनी लिखी हुई बात को अपने नाम के साथ पढ़ते और जो बच्चे अभी पढ़ने की शुरुआती अवस्था में थे वे लिखी हुई बात पर हुई चर्चा से लिखे हुए संदेश में

चिह्नों को पढ़कर समझने का प्रयास करते और बोली गई बात के लिखित रूप के साथ एक रिश्ता बनाने का प्रयास करते। इस तरह बच्चे अब पढ़ने की प्रक्रिया से जुड़ने लगे थे। कक्षा में एक दूसरी चीज़ यह भी की गई कि बच्चों द्वारा कक्षा शिक्षण के दौरान पढ़ी गई कहानियों, कविताओं व अन्य रोचक कहानियों, किस्से, अखबारी बाल चुटकुले, कोई ज़रूरी खबर, पहेलियाँ व चित्र कहानियों के पोस्टर कक्षा की दीवारों पर लगाये गए। समय के साथ अब हमारी कक्षा लिखित सामग्री से समृद्ध हो चुकी थी।

बच्चे अकसर बहुत पुरानी हो चुकी कहानियों व अन्य पोस्टरों को हटाने की माँग करते तो कई बार उन्हें कुछ कहानियाँ इतनी पसंद आतीं कि वे बार-बार उसे पढ़ते। बच्चे सामान्यत: अपने खाली समय में दीवारों पर लगी किसी चित्र कहानी को अपने शब्द देते तो किसी अधूरी छूटी हुई कहानी को पूरा करने के लिए अंदाज़ा लगाते व स्टोरी बोर्ड व पोस्टरों पर बनी खाली जगह में अपनी बात लिखने का प्रयास करते। वे जोड़े या समूह में चित्र कहानियों पर चर्चा करते व अपने-अपने अंदाज़े को साझा करते। कक्षा का यह प्रिंट समृद्ध परिवेश बच्चों को पढ़ने व लिखने के लिए उत्साहित करने में कारगर सिद्ध हुआ। पढ़ने के लिए यह उत्साह बच्चों को पढ़ने की प्रक्रिया में जुड़े रहने के लिए प्रेरित करता था जो पढ़ना सीखने के लिए बेहद ज़रूरी है। कक्षा पुस्तकालय में रखी गई अलग-अलग प्रकार की किताबें, जैसे — बिग बुक्स, रोमांचक कहानियाँ, पचतंत्र की कहानियाँ, तेनालीरामन की कहानियाँ व चित्र कहानी आदि प्राय: कक्षा में आने वाले भिन्न-भिन्न स्तर के बच्चे,जैसे — वे बच्चे जो कक्षा तीन के हिसाब से अभी पढ़ना सीखने को लेकर संघर्ष कर रहे थे, चित्र किताबों या बिग बुक्स की मदद से चित्र में व्याप्त संदर्भ से अक्षरों का अंदाज़ा लगाते थे। कई बार वे अपनी स्वयं की व्याख्या के हिसाब से ही कहानी को पढ़ते थे। इस प्रक्रिया में भले ही शब्दों का उच्चारण सटीक न हो पर कहानी पर उनकी एक समझ बनती थी।

पुस्तकालय कोने में लगे बोर्ड पर अपने नाम के साथ उस दिन पढ़ी गई किताब का नाम लिखते और अपने दूसरे साथियों से भी चर्चा करते। अपने एक साथी से किसी किताब की रोचकता में कही गई बातें अकसर पहले बच्चे को उस अमुक किताब को पढ़ने के लिए प्रेरित करती थी। इस प्रकार कक्षा में लिखित सामग्री से युक्त परिवेश,बाल साहित्य का प्रयोग व बच्चों के सीखने की गति और तरीके के प्रति शिक्षिका का सकारात्मक रवैया कक्षा के बच्चों में पढ़ने की आदतों को उत्पन्न करने तथा विकसित करने में कारगर साबित हो रहा था। इसके साथ ही बच्चों से उनके द्वारा पढ़ी गई कहानी पर कक्षा में चर्चा भी, बच्चों को कहानी को समझकर अपनी बात रखने के अवसर देती थी व उस कहानी में निहित किसी समस्या तथा द्वंद पर सोच पाने, कल्पना कर पाने और हल ढूँढ़ पाने में सहयोग देती थी। बच्चे अपने द्वारा पढ़ी गई कहानी पर अकसर अपनी बात भी लिख कर लाते व कक्षा शिक्षिका होने के नाते मुझसे उन विचारों को साझा करते। कहानी पर अपने विचार अभी लिखित रूप में कम ही दिए जाते थे, परंतु खाली समय पाते ही वे पढ़ी गई किताब पर मुझसे खूब चर्चा करते व अपने प्रत्युत्तरों (responses) को साझा करते। उन किताबों में कई कहानियाँ ऐसी भी थीं जिन्हें मैं नहीं पढ़ पाई थी। यह बात मैं बच्चों को बता दिया करती थी इस पर वे मुझे भी अपने द्वारा पढ़ी गई कहानी या

कविता को पढ़ने के लिए प्रेरित किया करते। इस तरह बच्चों में एक आत्मबोध भी विकसित हो रहा था जिसमें कक्षा के प्रति, किताबों के प्रति व अन्य लोगों के प्रति उनकी क्या ज़िम्मेदारी है, इसकी समझ शामिल थी।

निष्कर्ष

अंततः यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक शालाओं में बच्चों को पढ़ना-लिखाना सिखाना एक सार्थक व सकारात्मक माहौल में ही संभव है जहाँ बच्चों को पढ़ने-लिखने के लिए समृद्ध अवसर दिए जाएँ। लिखित सामग्री से भरपूर कक्षाएँ बच्चों को लगातर पढ़ने की प्रक्रिया से जोड़े रखती हैं व लिखित सामग्री और मौखिक भाषा के बीच एक संबंध स्थापित करने में सहायक होती हैं। इसके साथ ही कक्षा में रोचक व सौंदर्यपूर्ण साहित्य की उपलब्धता बच्चों में किताबों और साहित्य के प्रति पढ़ने का रुझान भी पैदा करती हैं। पढ़ने को लेकर बच्चों का यह रुझान ही उनमें समझकर पढ़ने की योग्यता को विकसित करने में भी मदद करता है। साथ ही कक्षा में शिक्षिका का बच्चों के सीखने के प्रति एक सकारात्मक रवैया भी बच्चों में पढ़ने की इच्छा व स्वभाव को लेकर प्रेरणा का स्रोत बनता है।

संदर्भ

कौशिक, सोनिका. 2008.'व्हॉट इज़ रीडिंग'. *रीडिंग फ़ॉर मीनिंग*. रीडिंग डेवलपमेंट सेल, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

रोशेनलास्ट, लूइस. 2005. *मेकिंग मीनिंग विद् टेक्सट*. हीनमैन. प्रोटस्मांउथ, न्यू हैम्पशायर.

स्मिथ, फ्रैंक.1971. *अंडरस्टैंडिंग रीडिंग*. एल.ई.ए. न्यू जर्सी.